Mukesh Kumar
Madhepura College
Madhepura (B.Ed. Department)

NOTES DATE

Class:- B.Ed (Ist Year)
Sub:- C.I.E (Course - 2)
Unit:- 3
Topic:- Nationalist critique of Colonial Education & Experiments with Alternatives

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ तो उस समय फिर से एक बार देश में राष्ट्रीयता की लहरें उठने लगीं। भारत में धीरे-धीरे राजनीतिक चेतना (ज्ञान, बुद्धि) का विकास हुआ। समाज सुधारकों ने भी महसूस किया कि बिना शिक्षा नीति में सुधार किये भारतीय समाज का कल्याण संभव नहीं है। अतः उन्होंने शिक्षा में सुधार की माँग करना शुरू कर दिया। समाज सुधारकों में - राजा राम मोहन रॉय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वर-चन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, डा० भीमराव अम्बेडकर, विनोबा भावे, मदर टेरेसा, बाबा आमटे (मुरलीधर देवीदास आमटे) इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में राष्ट्रीयता (देश-प्रेम) की भावना को और बल मिला तथा इसी संदर्भ में उन्हें तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति अच्छी न लगी। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्ष भारतीय शिक्षा के इतिहास में सदैव स्मरण रहेंगे। यह वह समय था, जब न केवल देश के निवासियों वरन् शासकों ने भी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन करने के प्रयास किये। इन शासकों में लार्ड कर्जन का स्थान सर्वोपरि है। उसने भारतीय शिक्षा के विभिन्न अंगों को पुनर्संगठित करके शक्तिशाली बनाने का प्रयास किया। वह 1889 से 1905 तक भारत का वायसराय रहा। इस अवधि में शिक्षा को व्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए अनेक प्रयास किये गये। हम उनमें से महत्वपूर्ण का विवरण नीचे की पंक्तियों में दे रहे हैं; यथा :-

Scanned with CamScanner

NOTES DATE

1. शिमला शिक्षा सम्मेलन, 1901 (Simla Edu. Conf. 1901)

जिस समय कर्जन ने भारत की धरती पर पैर रखा, उस समय यहाँ की शिक्षा की स्थिति अति शोचनीय थी। उसका चित्र अंकित करते हुए 'Progress of Education in India, 1902-07' में लिखा गया, "1897 से 1902 तक का समय प्रगतिशील शिक्षा के इतिहास में सबसे अधिक अप्रगतिशील था। छात्रों की संख्या बहुत कम थी और स्कूलों की संख्या भी कम हो गई थी। उच्च कोटि का विद्वान और कुशल प्रशासक होने के कारण कर्जन की नजर से भारतीय शिक्षा की अवनत दशा बहुत समय तक छिपी न रह सकी। कर्जन ने उसमें सुधार करना आवश्यक समझकर स्वयं लिखा, "जब मैं भारत आया, तब शैक्षिक सुधार उन कार्यों में से मेरे सामने उपस्थित हुआ, जिसका प्रशासकीय पुनर्संगठन के किसी भी कार्यक्रम में प्रमुख स्थान होना उचित जान पड़ा।"

शिक्षा सुधार के कार्य को क्रियात्मक रूप देने के लिए कर्जन ने 'शिमला शिक्षा सम्मेलन' का आयोजन किया। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रान्तों के शिक्षा संचालकों और मिशनरियों के प्रतिनिधियों को तो बुलाया गया, पर किसी भी भारतीय को नहीं बुलाया गया। अतः भारतीयों का इसको शंका की दृष्टि से देखना स्वाभाविक था।

उक्त सम्मेलन कर्जन के सभापतित्व में 15 दिन हुआ और उसमें शिक्षा संबंधी 150 प्रस्ताव पास किये गये। कर्जन ने इन्हीं प्रस्तावों को अपनी शिक्षा नीति का आधार बनाया। सम्मेलन के संबंध में एक विशेष बात यह थी कि उसकी कार्यवाही को पूर्ण रूप से गुप्त रखा गया। सम्मेलन के प्रति भारतीयों को पहले से ही संदेह था। उसकी गुप्त कार्यवाही ने उनके संदेह की पुष्टि कर दी। अतः वे (भारतीय) इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि "उनके विरुद्ध कोई षड्यंत्र रचा गया था।" इन्हीं कारणों की वजह से कर्जन को भारतीयों का सहयोग न मिल सका।

Scanned with CamScanner